

## विचार बिन्दु

केवल आत्मज्ञान ही हृदयात्मा को सच्चा आनंद प्रदान करता है। —रामतीर्थ

## बीते वर्ष का हिंदी साहित्य परिदृश्य: कुछ नोट्स

एक परंपरा-सी बन गई है कि बीते साल के आखिर में या आते साल के प्रारम्भ में उपलब्धियों और आकांक्षाओं का आकलन किया जाए। मेरा संबंध क्वाँकि साहित्य से है, मुझे भी यह उचित लग रहा है कि बीते बरस में (और उससे थोड़ा पहले भी) हमारे हिंदी साहित्य का हाल-चाल कैसा रहा, इसकी पड़ताल करूँ। अब जब मैं पीछे की तरफ मुड़ कर देखा हूँ तो पता हूँ कि हिंदी में लिखा खूब जा रहा है। पहले से ज्यादा लिखा जा रहा है। पहले से ज्यादा में इसलिए कह रहा हूँ कि हमारे यहाँ शिक्षा का प्रसार हुआ है और उसी के साथ सोशल मीडिया का उपयोग बढ़ने की वजह से अपने लिखे को औरों के सामने लाना, उस पर उनकी सराहना पाना और समाज में अपने लिए एक विशिष्टता अर्जित करना अधिक सुगम हुआ है। पहले जहाँ हमें अपने लिखे को दूसरों के सामने लाने के लिए किसी संपादक या प्रकाशक की सहमति की ज़रूरत होती थी, आज उस भूमिका में हम सब स्वतः आ गए हैं। इस कारण जो भी लिखा जा रहा है वह कम से कम सोशल मीडिया के माध्यम से तो सबके सामने आ ही रहा है, और जो लोग अपने इस लेखन काम को अधिक गंभीरता से लेते हैं वे बाकायदा लेखक के रूप में प्रतिष्ठित भी हुए हैं। आज हमारे आस-पास ऐसे अनेक रचनाकार हैं जिन्होंने अपने लेखन की शुरुआत सोशल मीडिया से की और यहीं लिख-लिखकर वे न केवल अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवा सके, उनके लिए एक बड़ा पाठक वर्ग भी तैयार कर सके।

जो लोग सोशल मीडिया तक सीमित नहीं रहना चाहते हैं आज उनके लिए भी अपने लिखे को प्रकाशित करवाने के अवसर बहुत बढ़े हैं। इधर कुछ बरसों से हमारे प्रकाशन जगत में एक नई रीत चल निकली है, जिसे मैं प्रकाशन की स्वतंत्रतापो योजना कहता हूँ। आज ऐसे अनेक प्रतिष्ठान बाजार में आ गए हैं जो आपसे पैसा लेकर आपको किताब छापकर दे देते हैं। किताब की गुणवत्ता को परखने की उन्हें कोई ज़रूरत नहीं होती है, इसलिए पहले प्रकाशक नाम की जो बाधा किताब छपवाने में हुआ करती थी, अब वह भी हट गई है। फलतः प्रकाशित होने वाली किताबों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई है। निश्चय ही इस कारण खूब सारा अपरिपक्व लेखन भी सामने आ रहा है, लेकिन फिलहाल मैं केवल संख्या की बात कर रहा हूँ इसलिए इस चर्चा को बाद के लिए बचा कर रख रहा हूँ।

लेखन की जहाँ तक बात है, हिंदी में कविताएँ सबसे अधिक लिखी जाती हैं। कविता को लेकर अलग-अलग लोगों का अलग-अलग नज़रिया है। छंद और छंद विहीनता की बात छोड़ भी दें तो जहाँ बहुत सारे लोग सपाट बयानी को कविता मानने से इंकार करते हैं, वहीं अधिसंख्य नए रचनाकार गद्य की पंक्तियों को तोड़कर लिख देने को ही कविता मान लेते हैं। उनमें से बहुत सारे अपने सोच और शिल्प को बदल कर गंभीर और बेहतर कवि भी बनने हैं, और बहुत सारे आम मुग्धता और सोशल मीडिया की लाइक्स से संतुष्ट रह कर उसी लोक पर चलते रहते हैं। वैसे ऐसा केवल कविता के मामले में ही नहीं अन्य बहुत सारी विधाओं के मामले में भी हो रहा है। अपनी देखी किसी कविता को कहानी का नाम दे देना या कुछ भी लिखे को व्यंग्य का नाम दे देना बहुत आम है। मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि हमारे उत्साही रचनाकारों ने कविता के बाद सर्वाधिक अन्याय व्यंग्य के साथ किया है। इधर गद्य की दुनिया में आजकल सर्वाधिक लेखन कथेतर में हो रहा है। इस बात पर बहुत सारी चर्चाएँ भी हुई हैं कि आज का पाठक कथेतर पढ़ना और लेखक कथेतर लिखना क्यों पसंद करते हैं। सर्वाधिक रेखांकित करने योग्य नवाचार भी कथेतर में ही हो रहे हैं और बहुत सारे एकदम नए लेखक अपने लेखन की ताज़गी से इसी विधा को समृद्ध कर रहे हैं।

जब इतना सारा लिखा जा रहा है तो अपेक्षा यही होती है कि इस लिखे पर चर्चा भी हो रही होगी। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं है। नए लिखे जा रहे पर ज्यादा से ज्यादा लोकार्पण आयोजनों में थोड़ी बात होती है, हालाँकि वह बात औपचारिक और अवसरानुरूप प्रशंसात्मक ही होती है। प्रकाशनों में पुस्तक समीक्षा की जगह सिफ्ट-सिफ्टके लगभग अदृश्य ही हो गई हैं और दूसरी बात यह भी कि अपने समीक्षकर्म को गंभीरता से लेने वाले समीक्षकों की संख्या भी निरंतर घटती जा रही है।

**लेखकीय आयोजन के नाम पर या तो लोकार्पण समारोह होते हैं या फिर कवि गोष्ठियाँ। छोटे कस्बों और शहरों में तो आयोजन में सम्मानजनक उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए भी कवि गोष्ठी साथ में रखने की मज़बूरी होती है। अब बड़े शहरों में भी साहित्यिक आयोजन करना कठिन होता जा रहा है। वैचारिक रूप से समृद्ध करने वाले आयोजन बहुत ही कम होते हैं।**

बड़े शहरों में भी साहित्यिक आयोजन करना कठिन होता जा रहा है। वैचारिक रूप से समृद्ध करने वाले आयोजन बहुत ही कम होते हैं। अधिकांश आयोजन उत्सव धर्मिता की परिणति होते हैं। इधर जबसे जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल व्यावसायिक रूप से सफल हुआ है, देश भर में लिटरेचर फेस्टिवल्स की लाइन लगा गई है। हमारे अपने प्रदेश में भी अनेक लिटरेचर फेस्टिवल होते हैं और प्रायः वे सभी जेएलएफ के पैटर्न पर होते हैं। भले ही उनमें बहुत ज्यादा सार्थक और गम्भीर विमर्श न होता हो, यह स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए कि इनकी वजह से एक बड़ा समूह साहित्य और विचार के संर्क में आता है।

इधर हिंदी में सम्मान और पुरस्कारों की तो जैसे बाढ़ ही आ गई है। सम्मान तो ख़ैर अब इतना सरल और सरसा हो गया है कि बिना हर्ष फिटकरी के हो जाता है। ऑनलाइन सम्मान का तो कहना ही क्या! अगर ऑफलाइन भी हो तो चार सौ रुपये में किसी का भी सम्मान किया जा सकता है, कर दिया जाता है। एक मानपत्र, एक शॉल, एक नारियल और एक माला। और क्या चाहिए? पुरस्कारों का हाल यह है कि पचास लोगों से पंजीकरण राशि लेकर दस लोगों को पुरस्कृत करने वाली अनेक दुकानें खुल गई हैं जो बाकायदा विज्ञापन करके पुरस्कार के लिए आवेदन मंगवाती हैं - और लोग आवेदन करके पुरस्कृत होते भी हैं। बैशक ऐसे भी अनेक पुरस्कार हैं जिन्होंने अभी भी अपनी साख बचा रखी है, लेकिन छत्र पुरस्कारों की भीड़ ने उनकी गरिमा को भी आहत किया है।

यों तो पहले भी साल के आखिर में वर्ष भर के लेखन का लेखा-जोखा अखबारों वगैरह में होता था, इधर कुछ वर्षों से अलग-अलग संस्थान साल भर की दस-बीस बेहतरीन किताबों की सूची जारी करने लगे हैं। वैसे तो यह बहुत अच्छी बात है लेकिन इन सूचियों को देखकर यह लगता है कि सारी अच्छी किताबें राजधानी के दो-चार प्रकाशकों के यहाँ से ही आ रही हैं। यथायथ यह नहीं है। दूरस्थ शहरों और कस्बों के छोटे और लगभग अनाम प्रकाशकों के यहाँ से भी अच्छी किताबें आती हैं लेकिन बड़े प्रकाशनों में छपने वाले लेखक उनका नोटिस लेना भी ज़रूरी नहीं समझते। हो सकता है यह उनकी भी सीमा हो जो ये सूचियाँ बनाते हैं। लेकिन अगर अनुमानतः दो सौ प्रकाशकों के यहाँ से हर साल छपने वाली लगभग दो हजार किताबों में से दो-तीन प्रकाशन गृहों की बीसेक किताबें ही चर्चा में आती हैं तो कहीं न कहीं कोई गड़बड़ तो है, और इसे ठीक किया जाना ज़रूरी है। एक तरीका यह भी हो सकता है कि जो भी गंभीर पाठक हैं वे अपनी पढ़ी बेहतरीन किताबों की चर्चा किया करें ताकि सबका ध्यान उनकी तरफ जाए।

साहित्यकारों की दुनिया में विवाद न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। सोशल मीडिया के प्रसार वाले इस समय में विवाद की आग में दो चार लकड़ियाँ वे भी डाल देते हैं जिन्हें उस विवाद का एबीसीडी भी पता नहीं होता है। ज्यादातर विवाद ऐसे होते हैं जिनके होने का कोई औचित्य नहीं होता। मैं तो मानता हूँ कि ये विवाद हमारी नीरस ज़िंदगी को थोड़ा रोचक और रोमांचक बना देते हैं, इससे ज्यादा कुछ नहीं।

लेखन की बात करते हुए इस बात की चर्चा करना बहुत ज़रूरी है कि भारत सरकार ने हाल में बुक पोस्ट की रियायती व्यवस्था को खत्म करके पुस्तकों-पत्रिकाओं के प्रेषण पर बहुत कठोर आघात किया है। जब साठ-सत्तर रुपये में भेजी जाने वाली सामग्री के लिए दो सौ सोलह रुपये खर्च करने पड़ेंगे तो कल्पना की जा सकती है कि हमारे प्रकाशन जगत पर और साहित्यानुगामी पाठकों पर इसका क्या और कैसा प्रभाव पड़ेगा। सरकार का अकेला यह कदम हमारे पढ़ने-लिखने को बहुत गहरा आघात पहुंचाएगा। जहाँ तक राजस्थान की बात है, यहाँ सरकार बदलने के कारण पिछली सरकार द्वारा गठित विभिन्न भाषाओं की अकादमियाँ अब मृत प्रायः हैं। जो थोड़े बहुत पुरस्कार व अनुदान-सहायता लेखकों को मिलते थे वे सब बंद हैं। नई सरकार की प्राथमिकता में अभी अकादमियों के अध्यक्ष बनाना का काम नहीं है। वैसे भी रणनीति की दृष्टि से सरकारों को यही सुझाव लगता है कि बर के इस छठे में जाते-जाते ही हाथ डाला जाए। सो अभी अकादमियाँ केवल नाम भर को हैं। सेहत साहित्यिक संस्थाओं की भी बहुत अच्छी नहीं है। इसलिए जो हो रहा है वह लेखकों के व्यक्तिगत प्रयासों से ही हो रहा है।

—अतिथि संपादक,  
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल  
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



डॉ. रामावतार शर्मा

आनुवंशिकता एक जटिल विषय है और इसका आधार जीन स्वयं में एक जटिल संरचना होती है जो कि डीएनए नामक एक अतिसूक्ष्म प्रोटीन यौगिक में स्थापित होती है। क्रोमोसोम की कोशिका में 46 क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते हैं परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटा होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालाँकि पुत्र की जन्म देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताड़ित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक युगल का आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य

करता है। हमारे शरीर में धागनुमा दो सूक्ष्मदर्शी संरचनाएं होती आसस में लिपटी हुई होती हैं जिन्हें क्रोमोसोम कहा जाता है। जीन इन्हीं क्रोमोसोम में हर एक कोशिका के केंद्रक (न्यूक्लियस) में स्थापित होती है। क्रोमोसोम की कोशिका में 46 क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते हैं परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटा होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालाँकि पुत्र की जन्म देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताड़ित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक युगल का आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य

करता है। हमारे शरीर में धागनुमा दो सूक्ष्मदर्शी संरचनाएं होती आसस में लिपटी हुई होती हैं जिन्हें क्रोमोसोम कहा जाता है। जीन इन्हीं क्रोमोसोम में हर एक कोशिका के केंद्रक (न्यूक्लियस) में स्थापित होती है। क्रोमोसोम की कोशिका में 46 क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते हैं परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटा होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालाँकि पुत्र की जन्म देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताड़ित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक युगल का आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य

करता है। हमारे शरीर में धागनुमा दो सूक्ष्मदर्शी संरचनाएं होती आसस में लिपटी हुई होती हैं जिन्हें क्रोमोसोम कहा जाता है। जीन इन्हीं क्रोमोसोम में हर एक कोशिका के केंद्रक (न्यूक्लियस) में स्थापित होती है। क्रोमोसोम की कोशिका में 46 क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते हैं परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटा होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालाँकि पुत्र की जन्म देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताड़ित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक युगल का आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य

करता है। हमारे शरीर में धागनुमा दो सूक्ष्मदर्शी संरचनाएं होती आसस में लिपटी हुई होती हैं जिन्हें क्रोमोसोम कहा जाता है। जीन इन्हीं क्रोमोसोम में हर एक कोशिका के केंद्रक (न्यूक्लियस) में स्थापित होती है। क्रोमोसोम की कोशिका में 46 क्रोमोसोम 23 क्रोमोसोम युगल के रूप में होते हैं जिनमें 22 युगल तो एक समान होते हैं परंतु 23वां जोड़ा लैंगिक जोड़ा होता है जिसके द्वारा जीव के नर या मादा के रूप में प्रकट होने की क्रिया निर्धारित होती है। यह क्रोमोसोम युगल से मादा तथा युगल से नर के शरीर का निर्माण होता है जिसमें क्रोमोसोम माता से और या क्रोमोसोम पिता से आता है। इस संदर्भ में स्पष्ट देखा जा सकता है कि संतान के बेटा या बेटा होना पिता के माध्यम से आए क्रोमोसोम पर निर्भर करता है हालाँकि पुत्र की जन्म देने के लिए सदैव माता को ही आरोपित एवं प्रताड़ित किया जाता है। प्राकृतिक विकास श्रृंखला के तहत जीन समूह इस तरह विकसित हुआ है जिसमें वंश बढ़ाने की उम्र तक युगल का आकार और कई तरह के रोगों की संभावनाएं आदि सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। जीन आनुवंशिकता की आधारभूत (बुनियादी) इकाई होती है जिसमें शरीर द्वारा प्रोटीन की संरचना संबंधित सूचनाएं अंकित होती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर शरीर कार्य

## वन प्राणी ने किया बकरी का शिकार

बौली-बामनवास। क्षेत्र के लाखनपुर ग्राम पंचायत गांव में रविवार को प्रातः 11 बजे दिन दहाड़े ही एक वन प्राणी ने बकरी का शिकार करके मौत के घाट उतार दिया। इस दिनदहाड़े बकरी के शिकार करने को लेकर ग्रामीणों में भय व्याप्त हो गया एवं वन प्राणी को आबादी क्षेत्र से दूर भेजने के लिए वन विभाग को सूचित किया। लाखनपुर के ग्रामीणों ने बताया कि रविवार को 11 बजे दिनदहाड़े ही पैंथर ने गांव के पास ही हनुमान माली की बकरी का शिकार करके फाड़ दिया जिससे उसकी मौत हो गई। इस घटना से ग्रामीणों में दहशत व्याप्त हो गई। वे अपने जानवरों की सुरक्षा के इंतजाम करने लगे। सूचना पाकर बौली रेंज वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची एवं मौके पर जांच करके वन प्राणी को लकड़बग्घे (गृह) के पगमार्क पाए जाने के लिए की एवं बताया कि शिकार करने वाला वन प्राणी पैंथर नहीं लकड़बग्घा (जरख) था। लाखनपुर गांव अरावली पर्वत श्रृंखला वन क्षेत्र के नजदीकी बसा होने के कारण अक्सर वहां वन्य जीव आसपास आते जाते रहते हैं।

## 29 ट्रेनें 60 दिनों तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी ठहराव

जोधपुर, (कासं)।उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल से चलने व गुजरने वाली करीब 28 ट्रेनें अगले 60 दिनों तक सूरत रेलवे स्टेशन पर ठहराव नहीं करेगी। सूरत रेलवे स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य के तहत एयर कॉन्कोर्स के निर्माण हेतु लिए जा रहे ब्लॉक के कारण इन ट्रेनों का सूरत की जगह उधना रेलवे स्टेशन पर ठहराव सुनिश्चित किया गया है।जोधपुर डीआरएम पंकज कुमार सिंह के अनुसार सूरत स्टेशन से होकर गुजरने वाली यह ट्रेनें 7 जनवरी से 8 मार्च तक सूरत की बजाय उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

20944,भगत की कोठी-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक 10 जनवरी से 7 मार्च,ट्रेन 20966,भगत की कोठी-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट 11 जनवरी से 1 मार्च,ट्रेन 19056,जोधपुर-वलसाड साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी 5 मार्च तथा ट्रेन 22473, बीकानेर-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट 13 जनवरी से 3 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी। इसी तरह ट्रेन 16588,बीकानेर-यशवंतपुर एक्सप्रेस द्वि साप्ताहिक एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च,ट्रेन 14806, बाड़मेर-यशवंतपुर साप्ताहिक एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 19028, जयपुर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक एक्सप्रेस 13 जनवरी से 3 मार्च,ट्रेन 21902, बाड़मेर-बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च व ट्रेन 22932, जयसलमेर बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक सुपरफास्ट एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर ठहराव करेगी।

■ किसी भी असुविधा से बचने के लिए यात्री उधना स्टेशन पर इन ट्रेनों के आगमन व प्रस्थान का समय नेशनल ट्रेन इन्क्वायरी सिस्टम (एनटीईएस) अथवा रेलवे वेब साइट पर देख सकते हैं।

साप्ताहिक एक्सप्रेस 11 जनवरी से 1 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर करेगी। इसी प्रकार ट्रेन 07054, लागाड़-कांचीगुड़ा साप्ताहिक एक्सप्रेस 7 जनवरी से 4 मार्च,ट्रेन 14807, जोधपुर-दादर त्रि साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 7 मार्च,ट्रेन 16507, जोधपुर बैंगलुरु द्वि साप्ताहिक एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 16533, जोधपुर-बेंगलुरु साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी से 5 मार्च,ट्रेन 20943, बांद्रा टर्मिनस-भगत की कोठी साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 9 जनवरी से 6 मार्च,ट्रेन 12997, बांद्रा टर्मिनस-बाड़मेर साप्ताहिक हमसफर एक्सप्रेस 8 जनवरी से 5 मार्च, ट्रेन 14808, दादर-जोधपुर त्रि साप्ताहिक एक्सप्रेस 8 जनवरी से 8 मार्च,ट्रेन 16587,यशवंतपुर-बीकानेर साप्ताहिक एक्सप्रेस 10 जनवरी से 2 मार्च व ट्रेन 14708, दादर-लागाड़ रणपुर एक्सप्रेस 8 जनवरी से 8 मार्च तक सूरत की जगह उधना स्टेशन पर रूकेगी।

## भरतपुर के आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज को संक्रमण से बचाने के लिए परिजनों को खुद लाना पड़ा क्रेडल

भरतपुर, (निस)।मैन पावर की कमी से जूझ रहे आरबीएम अस्पताल में आए दिन मरीज के परिजनों को ही अपने मरीज की चिकित्सा सुविधा के लिए अपना सहयोग देना पड़ जाता है। ऐसा ही नजारा उस वक़्त देखने को मिला जब आग से गंभीर रूप से झुलसने पर एक महिला को इलाज के लिए जिला आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में भर्ती कराया गया। जहां आईसीयू वार्ड में वन मरीज के लिए क्रेडल ला होने पर आईसीयू वार्ड के स्टाफ ने मरीज को देखने आए लोगों को ही दूसरी बिल्डिंग में छठवीं मंजिला पर क्रेडल लाने के लिए भेज दिया। हालांकि क्रेडल लाना भी मरीजों के परिजनों के लिए आसान साबित नहीं रहा।



आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज के लिए परिजनों को अस्पताल के दूसरे ब्लॉक में बनी छठी मंजिला के बर्नर में जाना पड़ा जहां लोहे के जाल जिसे क्रेडल कहा जाता है। उसे अपने कंधों पर रखकर छठी मंजिल से नीचे आकर वापस ए ब्लॉक की मंजिल पर लाना पड़ा। जबकि या तो आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में वन मरीजों को क्रेडल की व्यवस्थाएं रखनी थी या फिर अस्पताल के स्टाफ को परिजनों के साथ भेजना चाहिए था। प्राप्त जानकारी के अनुसार नविया मौलव्ला निवासी मीरा शर्मा अपने घर में कड़ाके की सर्दी से बचाव के लिए लकड़ियों में आग लगा कर सेक रही थीं।

आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज के लिए परिजनों को अस्पताल के दूसरे ब्लॉक में बनी छठी मंजिला के बर्नर में जाना पड़ा जहां लोहे के जाल जिसे क्रेडल कहा जाता है। उसे अपने कंधों पर रखकर छठी मंजिल से नीचे आकर वापस ए ब्लॉक की मंजिल पर लाना पड़ा। जबकि या तो आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में वन मरीजों को क्रेडल की व्यवस्थाएं रखनी थी या फिर अस्पताल के स्टाफ को परिजनों के साथ भेजना चाहिए था। प्राप्त जानकारी के अनुसार नविया मौलव्ला निवासी मीरा शर्मा अपने घर में कड़ाके की सर्दी से बचाव के लिए लकड़ियों में आग लगा कर सेक रही थीं।

आरबीएम अस्पताल के ए ब्लॉक के आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीज के लिए परिजनों को अस्पताल के दूसरे ब्लॉक में बनी छठी मंजिला के बर्नर में जाना पड़ा जहां लोहे के जाल जिसे क्रेडल कहा जाता है। उसे अपने कंधों पर रखकर छठी मंजिल से नीचे आकर वापस ए ब्लॉक की मंजिल पर लाना पड़ा। जबकि या तो आरबीएम अस्पताल के आईसीयू वार्ड में वन मरीजों को क्रेडल की व्यवस्थाएं रखनी थी या फिर अस्पताल के स्टाफ को परिजनों के साथ भेजना चाहिए था। प्राप्त जानकारी के अनुसार नविया मौलव्ला निवासी मीरा शर्मा अपने घर में कड़ाके की सर्दी से बचाव के लिए लकड़ियों में आग लगा कर सेक रही थीं।

## कदम से कदम मिले स्वयं सेवकों के

मकराना, (निस)। डीडवाना कुचामन जिले के ग्राम पंचायत जूसरी ग्राम में रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर पथ संचलन निकाला गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने कदम से कदम मिलाकर पथ संचलन निकाला। इस दौरान रास्ते में जागह जागह पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया। पथ संचलन ग्राम के मुख्य मार्गों से होकर गुजरा जिसमें युवा, बुजुर्ग, बच्चों सहित हर उम्र के स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में शामिल हुए। संचलन में शामिल स्वयंसेवक कतारबद्ध होकर कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे जिनके आगे घोषवादन हो रहा था। कार्यक्रम में संघ के मुख्य वक्ता रज्जु कुमार जी ने बौद्धिक विकास व सामाजिक एकता पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि भारत देश का इतिहास बड़ा गौरवमय रहा तथा समाज में जागरूकता का चरित्र हो रहा है, यह पथ संचलन हिंदू समाज में आत्मविश्वास व जागरूकता को बढ़ाने का प्रतीक है।

■ अस्पताल में मैन पावर व मशीन पावर की कमी के चलते आए दिन मरीज के परिजन अपने मरीज को कंधों, व्हील चेयर, ट्रॉली पर खुद ले जाते अक्सर दिखाई देते हैं।

मुख्य वक्ता ने जीजाबाई के जयंती पर उनके बारे में बताया तथा सभी मातृ शक्ति जीजाबाई के जीवन से कुछ सीखे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री रघुनाराय महाराज श्री 108 श्री बनवारीशरण दास महावाचन रहे। कार्यक्रम में माननीय खंड संघ चालक महावीर जी उपस्थित रहे। संचलन के स्वागत के लिए ग्रामवासियों ने फूलों की वर्षा तथा रोशिलिया बनाई गई और पथ संचलन के मार्ग पर स्वागत द्वार भी बनाए गए।

मुख्य वक्ता ने जीजाबाई के जयंती पर उनके बारे में बताया तथा सभी मातृ शक्ति जीजाबाई के जीवन से कुछ सीखे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर श्री रघुनाराय महाराज श्री 108 श्री बनवारीशरण दास महावाचन रहे। कार्यक्रम में माननीय खंड संघ चालक महावीर जी उपस्थित रहे। संचलन के स्वागत के लिए ग्रामवासियों ने फूलों की वर्षा तथा रोशिलिया बनाई गई और पथ संचलन के मार्ग पर स्वागत द्वार भी बनाए गए।



**राशिफल**  
सोमवार 6 जनवरी, 2025  
पौष मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सायं 7:06 तक, परिध योग रात्रि 7:05 तक, वर्षाण करण सायं 6:24 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरु-वृष, शुक-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।  
आज भद्रा सायं 6:24 से आरम्भ होगा। आज गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती, पंचक है।  
श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:57 से 11:15 तक, चर 1:50 से 3:08 तक, लाभ-अमृत 3:08 से सूर्यास्त तक।  
राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:45

**मेघ**  
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बलना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद टलना ठीक रहेगा।

**तुला**  
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से रहित मिल सकती है। अटके हुए कार्य बहल लेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

**वृश्चिक**  
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

**धनु**  
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**मकर**  
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

**कुंभ**  
घर-परिवार में उत्सव का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

**मीन**  
मानसिक तनाव दूर होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

**कन्या**  
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।